तमलि साहत्यि: संगम काल

प्रलिमि्स के लयि:

संगम काल, कृष्णा और तुंगभद्रा नदयिाँ, थरुिमुरुगरुप्पडई, पोरुनाररुप्पडई, सरुिपनारुप्पडई, पेरुम्पनरुप्पडई, मुल्लाईपट्टू, नेदुनलवदाई, मदुरैक्कनजी, कुरनिजीपट्टू, पट्टनिप्पलई और मलाइपदुकदम।

मेन्स के लयि:

संगम साहत्यि के वभिन्नि पहलू और ऐतहिासकि ग्रंथों के रूप में उनकी प्रासंगकिता, तमलि साहत्यि का इतहिास।

चर्चा में क्यों?

हाल ही में शक्षिा राज्य मंत्री द्वारा तोलकाप्पयिम (Tolkāppiyam) के हदिी अनुवाद और शास्त्रीय तमलि साहत्यि की 9 पुस्तकों के कन्नड़ अनुवाद का वमिोचन कयिा गया।

- तमलि साहत्यि संगम युग से जुड़ा हुआ है, जसिका नाम कवयिों की सभा (संगम) के नाम पर रखा गया है।

मुख्य बदिु

- **संगम काल के बारे में:**
  - यह लगभग तीसरी शताब्दी ईसा पूर्व के मध्य की अवधि है। दक्षणि भारत (कृष्णा एवं तुंगभद्रा नदी के दक्षणि में स्थति क्षेत्र) में लगभग तीन सौ ईसा पूर्व से तीन सौ ईस्वी के बीच की अवधि को संगम काल के नाम से जाना जाता है।
  - इसका नाम उस अवधि के दौरान आयोजति संगम अकादमयिों/सभाओं के नाम पर रखा गया है जो मदुरै के पांड्य राजाओं के शाही संरक्षण में फली-फूली।
  - संगमों में प्रख्यात वद्विान इकट्ठे हुए और सेंसर बोर्ड के रूप में कार्य कयिा तथा संकलन के रूप में सबसे अच्छे साहत्यि का प्रतपिादन कयिा गया।
  - ये साहत्यिकि कृतयिाँ द्रवड़ि साहत्यि के शुरुआती नमूने थे।
  - संगम युग के दौरान दक्षणि भारत पर तीन राजवंशों- चेरों, चोल और पांड्यों का शासन था।
  - **तीन संगम:**
    - तमलि कविदंतयिों के अनुसार, प्राचीन दक्षणि भारत में तीन संगमों (तमलि कवयिों का समागम) का आयोजन कयिा गया था, जसिे मुच्चंगम **(Muchchangam)** कहा जाता था।
      - माना जाता है कि **प्रथम संगम मदुरै** में आयोजति कयिा गया था। इस संगम में देवता और महान संत शामलि थे। इस संगम का कोई साहत्यिकि ग्रंथ उपलब्ध नहीं है।
      - **दूसरा संगम कपाटपुरम्** में आयोजति कयिा गया था, इस संगम का एकमात्र तमलि व्याकरण ग्रंथ **तोलकाप्पयिम** ही उपलब्ध है।
      - **तीसरा संगम भी मदुरै** में हुआ था। इस संगम के अधकिांश ग्रंथ नष्ट हो गए थे। इनमें से कुछ सामग्री समूह ग्रंथों या महाकाव्यों के रूप में उपलब्ध है।
- **संगम साहत्यि**:
  - संगम साहत्यि में तोलकाप्पयिम, एट्टुटोगई, पट्टुप्पट्टू, पथनिेंकलिकनक्कु ग्रंथ और **शलिप्पादकिारम्** और **मणमिेखलै** नामक दो महाकाव्य शामलि हैं।
    - **तोल्काप्पयिम:** यह तोलकाप्पयिार द्वारा लखिा गया था और इसे तमलि साहत्यिकि कृतमिें सबसे पुराना माना जाता है।
      - यह व्याकरण से संबंधति एक ग्रंथ है, साथ ही यह उस समय की राजनीतकि और सामाजकि-आर्थकि स्थतियिों की जानकारी भी प्रदान करता है।
      - यह नौ खंडों के तीन भागों में व्याकरण और काव्य पर एक अनूठा काम है, जनिमें से प्रत्येक एज़ुट्टू (अक्षर), कोल (शब्द) और पोरुल (वषिय वस्तु) से संबंधति है।
      - सामान्य बोलचाल से लेकर काव्यात्मकता तक मानव भाषा के लगभग सभी स्तर तोल्काप्पयिार के वश्लिेषण के दायरे में

आते हैं, क्योंकि वे स्वर विज्ञान, आकृति विज्ञान, वाक्य रचना, बयानबाज़ी, छंद और काव्य पर उत्कृष्ट काव्यात्मक एवं एपिग्रामेटिक बयानों में व्यवहार करते हैं।

- **एट्टुटोगई (आठ संकलन):** इसमें आठ रचनाएँ शामिल हैं- ऐंगुरुनूरु, नरनिाई, अगनौरु, पुराणनूरु, कुरुंतोगई, कलत्तिोगई, परपिादल और पदरिट्टू।
- **पट्टुप्पट्टू (दस रचना):** इसमें दस रचनाएँ शामिल हैं- थरुिमुरुगरुप्पडई, पोरुनाररुप्पडई, सरुिपनारुप्पडई, पेरुम्पनरुप्पडई, मुल्लाईपट्टू, नेदुनलवदाई, मदुरैक्कनजी, कुरनिजीपट्टू, पट्टनिप्पलई और मलाइपदुकदम।
- **पाथनिैकलिकणक्कु (Pathinenkilkanakku):** इसमें नैतकिता और नैतकिता संबंधी अठारह कार्य शामिल हैं।

◦ इन कार्यों में सबसे महत्त्वपूर्ण महान तमलि कवि और दार्शनकि तरुिवल्लुवर द्वारा लखिति तरुिक्कुरल है।

- **तमलि महाकाव्य:** शलिप्पादकिारम् 'इलांगोआदगिल' द्वारा और मणमिेखलै 'सीतलैसत्तनार' द्वारा लखिे गए महाकाव्य हैं।
  - वे संगम समाज और राज्य व्यवस्था के बारे में बहुमूल्य ववरिण भी प्रदान करते हैं।

स्रोत: पीआईबी

PDF Refernece URL: https://www.drishtiias.com/hindi/printpdf/tamil-literature-sangam-period